Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि व्यक्तित्व और भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधका अध्यय

Bharti Chouhan[1]*, Dr. Rajesh Tripathi[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - अध्ययन का उद्देश्य कार्य संतुष्टि पर व्यक्तित्व और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव की जांच करना है।सबसे महत्वपूर्ण नई शैक्षिक पद्धति का तर्क है, जो हर मोड़ पर बच्चे और उसके व्यक्तित्व को शिक्षा के संपूर्ण भवन के केंद्र में रखने की आवश्यकता को पुष्ट करता है। वास्तव में, वर्षों से लोगों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर पर नज़र रखने वाले अध्ययनों से पता चलता है कि लोग अपनी भावनाओं और आवेगों को संभालने के साथ-साथ उन क्षमताओं में बेहतर और बेहतर होते जाते हैं।परिणाम से पता चला कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमान शिक्षक में उस औसत से उच्च स्तर की संतुष्टि होती है और साथ ही निम्न स्तर के भावनात्मक बुद्धिमान शिक्षक भी होते हैं। यह भी देखा गया है कि कर्तव्यनिष्ठ और सहमत शिक्षक अपने शिक्षण कार्य से अत्यधिक संतुष्ट हैं जबकि विक्षिप्त शिक्षक अपने शिक्षण कार्य से संतुष्ट नहीं हैं।

खोजशब्द - व्यक्तित्व, भावनात्मक बुद्धिमत्ता

----------X----------

परिचय

सबसे बड़े अर्थों में शिक्षा कोई भी कार्य या अनुभव है जो किसी व्यक्ति के दिमाग, चरित्र या शारीरिक क्षमता पर एक प्रारंभिक प्रभाव डालता है।यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज संचित ज्ञान, कौशल और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाता है।शैक्षिक संस्थानों में शिक्षक छात्रों की शिक्षा का निर्देशन करते हैं और कई विषयों पर अध्ययन, लेखन, गणित, विज्ञान और इतिहास सहित कर सकते हैं।वे स्वयं को विकसित करने और विद्यालय के आधुनिकीकरण में भाग लेने और इसे बदलने के लिए अधिक सक्रिय और ग्रहणशील बनाने की अपनी क्षमता को शिक्षित करने, सिखाने, मार्गदर्शन करने और मूल्यांकन करने के लिए भी हैं।उनकी भूमिका केवल सीखने की सुविधा के लिए नहीं है, बल्कि नागरिकता प्रशिक्षण और समाज में सक्रिय एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए, जिज्ञासा, महत्वपूर्ण सोच और रचनात्मकता, पहल और आत्मनिर्णय का विकास करना है।इसके अलावा, अन्य सूचना प्रदाताओं और समाजीकरण एजेंटों द्वारा निभाई गई बढ़ती भूमिका के साथ, यह उम्मीद की जाती है कि शिक्षक नैतिक और शैक्षिक मार्गदर्शकों की भूमिका ग्रहण करेंगे।[1]

यह विभिन्न भागीदारों द्वारा प्रदान की गई शैक्षिक गतिविधियों के समन्वयक के रूप में अपने कार्यों को पूरा करने के माध्यम से है और आम शैक्षिक लक्ष्यों के लिए निर्देशित किया गया है कि आधुनिक शिक्षक समुदाय में परिवर्तन के प्रभावी एजेंट बनेंगे।

नौकरी से संतुष्टि किसी भी पेशे में कामकाज का एक व्यापक रूप से स्वीकृत मनोवैज्ञानिक पहलू है जो बताता है कि कोई व्यक्ति अपनी नौकरी से कितना संतुष्ट है।

पिछली शताब्दियों से यह एक अपेक्षाकृत हालिया शब्द है क्योंकि किसी व्यक्ति विशेष के लिए उपलब्ध नौकरियां अक्सर उस व्यक्ति के माता-पिता के कब्जे से पूर्व निर्धारित थीं। यह एक कर्मचारी द्वारा अपनी नौकरी के प्रति किए गए विभिन्न दृष्टिकोणों का परिणाम है। ये दृष्टिकोण नौकरी के कारकों से संबंधित हो सकते हैं, जैसे कि वेतन, नौकरी की सुरक्षा, नौकरी

का माहौल, काम की प्रकृति, पदोन्नति के अवसर, शिकायतों को तुरंत हटाने, निर्णय लेने में भागीदारी के अवसर और अन्य फ्रिंज लाभ।[2]नौकरी की संतुष्टि को एक दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया गया है जो नौकरी के सिलसिले में अनुभवी कई विशिष्ट पसंद और नापसंद के संतुलन योग के परिणामस्वरूप होता है। यह किसी की नौकरी, उसके सामान्य समायोजन और उसकी नौकरी के भीतर और बाहर सामाजिक संबंधों को संदर्भित करता है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व वह सब है जो एक व्यक्ति है। यह स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति भी स्वयं के व्यवहार की समग्रता है। इसमें व्यक्ति के बारे में सब कुछ शामिल है, उसकी शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक बनावट।व्यक्तित्व शब्द लैटिन शब्द "पर्सोना" से आया है जिसका अर्थ है "मुखौटा"। मंच पर अभिनेताओं द्वारा मास्क का उपयोग किया जाता है। शायद यही कारण था कि एक समय में व्यक्तित्व को रूप-रंग का पर्याय माना जाता था। यदि ऐसा होता तो व्यक्ति दर्पण में उनके व्यक्तित्व को देख सकता था जो रेखा, रूप, रंग और सुंदरता में सबसे स्पष्ट और सबसे वफादार छवि पैदा करता है। वास्तव में, व्यक्तित्व से तात्पर्य उस सीमा तक है जिस तक एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करता है।

व्यक्तित्व व्यक्ति की संपूर्ण प्रकृति को समाहित करता है और इसलिए इसे परिभाषित करना कठिन है। यह अविश्वसनीय रूप से जटिल है, जीवन का परिणाम - लंबाअनुभव और प्रभाव। ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व को "एक व्यक्ति की आदतों, दृष्टिकोण और लक्षणों के पैटर्न के रूप में माना जो उसके पर्यावरण के साथ उसके समायोजन को निर्धारित करता है।" व्यवहार नैतिक है और इसे परमाणुओं में तोड़ा जा सकता है।[3] इन परमाणुओं को जीव की कुछ विशेषताएँ कहा जा सकता है जो व्यक्ति के साथ स्थायी हो जाती हैं व्यवहार की ये आदतन विशेषताएँ मनुष्य के व्यक्तित्व की गुणवत्ता निर्धारित करती हैं। यह एक "अद्भुत रूप से जटिल संरचना है जो नाजुक रूप से उद्देश्यों, भावनाओं, आदतों और विचारों से एक पैटर्न में बुना जाता है जो बाहर की दुनिया के खिंचाव और धक्का को संतुलित करता है।" यह पूरा व्यक्ति है जो कार्य करता है, प्यार करता है, पीड़ित होता है, लड़ता है और मर जाता है। एक व्यक्ति का अपने पर्यावरण के साथ व्यवहार करने का एक गुण होता है, उसका अपना एक व्यक्तित्व होता है। हम में से प्रत्येक के पास व्यवहार की गुणवत्ता होती है। किसी के व्यवहार का यह कुल गुण व्यक्तित्व से हमारा तात्पर्य है।व्यक्तित्व की कई परिभाषाएँ हैं। प्रत्येक परिभाषा व्यक्तित्व के प्रति एक अलग दृष्टिकोण का सुझाव देती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनोवैज्ञानिकों ने भी बड़ी संख्या में भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत कर इस भ्रम को और बढ़ा दिया है।

व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका

शैक्षिक जगत में 'व्यक्तित्व' शब्द का व्यापक महत्व है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो अच्छी तरह से संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण के उद्देश्य से बच्चे में सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकालती है, जो सांस्कृतिक रूप से परिष्कृत, भावनात्मक रूप से स्थिर, नैतिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सतर्क, नैतिक रूप से ईमानदार, शारीरिक रूप से मजबूत, सामाजिक रूप से कुशल, आध्यात्मिक रूप से जीवित, व्यावसायिक रूप से स्व-पर्याप्त और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उदार। शिक्षा प्रणाली को व्यक्तित्व विकास के रहस्य को मानसिक व्यक्ति के लिए जागृति और शरीर, जीवन और मन के विकास के रूप में इस तरह से जोर देना चाहिए कि वे उनके जागरण में सहायता कर सकें और चार गुना व्यक्तित्व के अच्छी तरह से प्रशिक्षित उपकरण बन सकें ज्ञान, शक्ति, सद्भाव और कौशल का।[4]

यह ज्ञात है कि व्यक्तित्व विकास एक आजीवन शिक्षा है। फिर भी, यह एक प्रक्रिया है, जो आरंभिक चरण से ही शुरू होनी चाहिए और शिक्षा के हमारे सभी चरणों के बहाव, सामग्री और पद्धति को निर्धारित करना चाहिए। इसके अलावा, यह अपरिहार्य लगता है कि व्यक्तित्व के विकास से प्रेरित शिक्षा हमारे दृष्टिकोण, दृष्टिकोण, विधियों, संरचना और पाठ्यक्रम के मूल्यांकन की प्रणाली और अन्य छात्रों के साथ बातचीत में आमूल-चूल परिवर्तन की मांग करती है। व्यक्तित्व विकास के लिए शिक्षा के लिए न केवल शैक्षिक संस्थानों के उद्देश्य, सामग्री और संरचना में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है, बल्कि सामाजिक अस्तित्व के संपूर्ण उद्देश्य, मोड और अंतर्संबंधों में भी एक क्रांति की आवश्यकता है।

सबसे महत्वपूर्ण नई शैक्षिक पद्धति का तर्क है, जो हर मोड़ पर बच्चे और उसके व्यक्तित्व को शिक्षा के संपूर्ण

www.ignited.in

भवन के केंद्र में रखने की आवश्यकता को पुष्ट करता है। आधुनिक शिक्षाविद ने यह महसूस किया है कि बच्चा प्लास्टिक की सामग्री नहीं है जिसे माता-पिता और शिक्षकों द्वारा वांछित आकार में ढाला और दबाया जाता है। छात्र को अपने अध्ययन के विषय, अपनी प्रगति तक पहुंच और यहां तक कि अपने शिक्षकों को चुनने के लिए स्वतंत्र विकल्प पर जोर दिया जाता है। व्यक्तिगत मतभेदों की मान्यता है, अध्ययन की सामग्री की प्रस्तुति में मनोवैज्ञानिक उपचार में भिन्नता की आवश्यकता है और प्रदर्शन के निर्णय के मानदंड हैं। नए पाठ्यक्रम और लचीले पाठ्यक्रम की मांग है, जो परीक्षा प्रणाली के व्यक्तित्व उन्मूलन के विकास की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के अनुरूप हो और इसलिए एक अधिक तर्कसंगत और मनोवैज्ञानिक प्रणाली की खोज की जाए जो परीक्षणों की प्रणाली को बदल सके। ये सभी मांगें और जरूरतें व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के विचार की ओर इशारा करती हैं।[5]

व्यक्तित्व की परिभाषा

शोधकर्ताद्वारा व्यक्तित्व की परिभाषा 'उन मनोचिकित्सा प्रणालियों के व्यक्ति के भीतर गतिशील संगठन है जो अपने पर्यावरण के लिए अपने अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करते हैं।शोधकर्ताका कहना है कि आम आदमी 'व्यक्तित्व' शब्द का इस्तेमाल दो अर्थों में करता है: कभी-कभी वह किसी परिचित व्यक्ति का वर्णन एक अच्छे या मजबूत व्यक्तित्व के रूप में करता है, जिसका अर्थ है कि उसके पास दोस्तों को जीतने और लोगों को प्रभावित करने के लिए उसका नामांकन करने वाले गुण हैं। अन्य समय में वह लोगों को उनकी सबसे हड़ताली विशेषताओं जैसे विनम्रता, आवेग, आक्रामकता, आदि के संदर्भ में बताता है। शोधकर्ताने व्यक्तित्व को एक व्यक्ति की कुल मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रतिक्रियाओं के रूप में परिभाषित किया, जो उसके व्यक्तिपरक, भावनात्मक और मानसिक जीवन का संश्लेषण था। उनके व्यवहार और पर्यावरण के लिए उनकी प्रतिक्रियाएं: किसी व्यक्ति के अद्वितीय या व्यक्तिगत लक्षण शब्द चरित्र की तुलना में व्यक्तित्व द्वारा कुछ हद तक कम होते हैं। शोधकर्ताको उस रूप में परिभाषित किया गया है जो किसी व्यक्ति को किसी स्थिति में क्या करेगा की एक भविष्यवाणी की अनुमति देता है। व्यक्तित्व में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान का लक्ष्य इस प्रकार कानूनों को स्थापित करना है जो विभिन्न प्रकार के सामाजिक और सामान्य पर्यावरणीय परिस्थितियों में विभिन्न लोग क्या करेंगे। शोधकर्ताने व्यक्तित्व की परिभाषा दी है कि 'हमारा व्यक्तित्व इस प्रकार है कि हम जिस चीज से शुरू करते हैं और जो हम जीते हैं।' यह 'समग्र रूप से प्रतिक्रिया' है।[6] शोधकर्ताका कहना है कि व्यक्तित्व कुल व्यक्ति के जैविक कामकाज के विचार का पर्याय है, जिसमें उसके सभी विभिन्न मौखिक रूप से अलग-अलग पहलू शामिल हैं, जैसे कि बुद्धि, चरित्र, ड्राइव, भावुक दृष्टिकोण, रुचियां, समाजशास्त्र और व्यक्तिगत उपस्थिति, साथ ही साथ। उनकी सामान्य सामाजिक प्रभावशीलता के रूप में। शोधकर्ताने कहा कि व्यक्तित्व एक व्यक्ति के गुणों का योग है।

शोधकर्ताके अनुसार विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व शब्द का उपयोग सामाजिक आकर्षण के रूप में किया। वास्तव में, व्यक्तित्व की उनकी परिभाषा में न केवल रोजमर्रा की स्थितियों में खुद को संचालित करने के एंथोलॉजिकल तरीके शामिल हैं, बल्कि ऐसे कंडीशनिंग कारक जैसे कि काया, उपस्थिति, बुद्धिमत्ता, योग्यता और चरित्र लक्षण हैं। इन सभी का योगदान, एक व्यक्ति की कुल गुणवत्ता में डिग्री को अलग-अलग करने के लिए है, जो कि छापा है, जिसे वह अन्य लोगों पर बनाता है।वास्तव में, भावनात्मक बुद्धि बुद्धिमान भागफल का एक अनिवार्य उत्प्रेरक और बढ़ाने वाला है। बुद्धिमान भागफल और भावनात्मक भागफल एक दूसरे के साथ परस्पर संबंध रखते हैं और यह उनकी संबंधित ऊर्जाओं को स्थिर करते हुए एक से दूसरे में गतिशील तनाव पैदा करता है। समान बुद्धिमान भागफल वाले लोगों के लिए, कुछ दूसरों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह कुछ और बताता है, जो इंटेलिजेंट कोशिएंट काम कर रहा है। वह कुछ या उसका एक बड़ा हिस्सा, भावनात्मक भागफल है। जब भावनाओं को स्वीकार किया जाता है और रचनात्मक रूप से निर्देशित किया जाता है, तो वे प्रदर्शन को बढ़ाते हैं। बुद्धिमान भागफल के विपरीत, भावनात्मक भागफल को वयस्कता में भी विकसित और पोषित किया जा सकता है और यह किसी के स्वास्थ्य, रिश्ते और प्रदर्शन के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। वर्षों से, जोरदार बहस ने इस मुद्दे को घेर लिया है कि क्या प्रकृति (आनुवंशिक बंदोबस्ती) या पोषण (पर्यावरण प्रभाव) मुख्य रूप से व्यक्तित्व का निर्धारण करते हैं या नहीं? व्यक्तित्व को स्थिर शारीरिक और मानसिक विशेषताओं के संयोजन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो व्यक्ति को उसकी पहचान देता है।[6]

बौद्धिक भागफल के विपरीत भावनात्मक बुद्धिमत्ता को सीखा और धीरे-धीरे विकसित किया जा सकता है, जिसे एक विशेष उम्र के बाद विकसित नहीं किया जा सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास अनुभवों के माध्यम से होता है। अनुभव के माध्यम से योग्यता बढ़ती रहती है; लोग भावनाओं को संभालने, दूसरों को प्रभावित करने और सामाजिक निपुणता में बेहतर और बेहतर होते जाते हैं। वास्तव में, वर्षों से लोगों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर पर नज़र रखने वाले अध्ययनों से पता चलता है कि लोग अपनी भावनाओं और आवेगों को संभालने के साथ-साथ उन क्षमताओं में बेहतर और बेहतर होते जाते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा

शोधकर्ताके अनुसार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह चीज है जिसे हम सहज रूप से जानते हैं। उनके अनुसार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक और श्रेणी की क्षमताओं से संबंधित है, जैसे पारस्परिक संबंध, काइनेस्टेटिक क्षमता, वैचारिक और रचनात्मक सोच, परिप्रेक्ष्य, अनुपात और सहसंबंध। यह बुद्धिमत्ता का एक रूप है जिसमें किसी की स्वयं की और दूसरों की भावनाओं और भावनाओं की निगरानी करने की क्षमता शामिल है, उनके बीच भेदभाव करने और इस जानकारी का उपयोग करने के लिए किसी की सोच और कार्यों का मार्गदर्शन करना है। बाद में, इन लेखकों ने भावनात्मक बुद्धि की अपनी परिभाषा को संशोधित किया, वर्तमान लक्षण वर्णन अब सबसे व्यापक रूप से स्वीकार किया जा रहा है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है: भावना को समझने की क्षमता, विचार को सुविधाजनक बनाने के लिए भावनाओं को एकीकृत करना, भावनाओं को समझना और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने के लिए भावनाओं को विनियमित करना।[7] इमोशन क्वोटिएंट 'शब्द का प्रवर्तक थोड़ा अलग दृष्टिकोण रखने वाला रेनवेन बार-ऑन पॉज़ेसिंग है। वह भावनात्मक बुद्धिमत्ता को परिभाषित करता है, जो अपने आप को और माता को समझने, लोगों से संबंधित होने और तत्काल परिवेश से निपटने और पर्यावरणीय मांगों से निपटने में अधिक सफल होने के लिए प्रेरित करता है ।[26] भावनात्मक बुद्धिमत्ता को भावनाएँस्वयं की भावनाओं को पहचानने, समझने और प्रबंधित करने और दूसरों की भावनाओं को प्रभावित करने के रूप में परिभाषित किया।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और संगठन

कार्यस्थल में अपनी भावनाओं और भावनाओं को अलग रखना अवास्तविक है। संगठनात्मक जीवन के लिए आवश्यक है कि हम दिन में आठ से बारह घंटे एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करें। हम अपने दोस्तों, जीवनसाथी या बच्चों की तुलना में अपने सहकर्मियों के साथ अधिक समय बिताते हैं। भावनाएं और राय सिर्फ इसलिए नहीं जाती क्योंकि हम कार्यस्थल में चलते हैं। काम पर हम काम के कपड़े तो पहन सकते हैं, लेकिन हम अपनी भावनाओं को दूर नहीं कर सकते, तो काम पर हमारी भावनाओं का क्या होता है? वे भूमिगत हो जाते हैं और एक शक्तिशाली अदृश्य शक्ति बन जाते हैं। इमोशनल इंटेलिजेंस शब्दनिम्नलिखित पांच विशेषताओं और क्षमताओं को शामिल करता है, जैसा कि गोलेमैन (1995) द्वारा चर्चा की गई है।[8]

(1) आत्म-जागरूकता- अपनी भावनाओं को जानना, भावनाओं को पहचानना और उनके बीच भेदभाव करना भावनात्मक रूप से साक्षर होना है। अपने और दूसरों में विशिष्ट भावनाओं को पहचानने और लेबल करने में सक्षम होना; भावनाओं पर चर्चा करने और स्पष्ट और सीधे संवाद करने में सक्षम होना। दूसरों के साथ सहानुभूति रखने, करुणा महसूस करने, मान्य करने, प्रेरित करने, प्रेरित करने, प्रोत्साहित करने और दूसरों को शांत करने की क्षमता। भावनाओं और तर्क के स्वस्थ संतुलन का उपयोग करके बुद्धिमान निर्णय लेने की क्षमता। न ज्यादा इमोशनल होना और न ही ज्यादा तर्कसंगत होना। अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने और जिम्मेदारी लेने की क्षमता, विशेष रूप से आत्म-प्रेरणा और व्यक्तिगत खुशी की जिम्मेदारी। अपनी भावनाओं को पहचानना और नाम देना, भावनाओं के कारणों का ज्ञान, भावनाओं और कार्यों के बीच अंतर को पहचानना।

(2) मनोदशा प्रबंधन- भावनाओं को संभालना ताकि वे वर्तमान स्थिति के लिए प्रासंगिक हों और आप उचित प्रतिक्रिया दें। निराशा सहनशीलता और क्रोध प्रबंधन, मौखिक उतार-चढ़ाव, झगड़े और समूह व्यवधानों को समाप्त करना, हिंसा का सहारा लिए बिना उचित रूप से क्रोध व्यक्त करने में सक्षम होना, कम निलंबन या निष्कासन, कम आक्रामक या आत्म-विनाशकारी व्यवहार, स्वयं, स्कूल और परिवार के बारे में अधिक सकारात्मक भावनाएं , तनाव से निपटने में बेहतर।[9]

(3) आत्म-प्रेरणा- आत्म-संदेह, जड़ता और आवेग के बावजूद, अपनी भावनाओं को "एकत्रित" करना और

www.ignited.in

अपने आप को एक लक्ष्य की ओर निर्देशित करना। अधिक जिम्मेदार, हाथ में काम पर ध्यान केंद्रित करने और ध्यान देने में सक्षम, कम आवेगी; उपलब्धि परीक्षणों पर अधिक आत्म-नियंत्रित और बेहतर अंक।

(4) सहानुभूति- दूसरों में भावनाओं को पहचानना और उनके मौखिक और गैर-मौखिक संकेतों में ट्यूनिंग। दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को बेहतर ढंग से लेने में सक्षम, बेहतर सहानुभूति और दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील, दूसरों को सुनने में बेहतर। संबद्ध व्यक्ति मिलनसार, मिलनसार, मददगार और लोगों के साथ व्यवहार करने में कुशल होते हैं, और अपनी भावनाओं के बारे में खुलकर बात करते हैं। वे अच्छे साथी बनाते हैं क्योंकि वे सुखद और सहमत होते हैं। दूसरे उनके साथ सहज महसूस करते हैं और उन्हें पसंद करते हैं। दूसरे शब्दों में, संबद्ध व्यक्तियों के पास दूसरों के साथ व्यवहार करने में बेहतर भावनात्मक और सामाजिक कौशल होते हैं, अपने पारस्परिक संपर्कों से संतुष्टि और पुरस्कार प्राप्त करते हैं, और दूसरों के लिए खुशी का स्रोत होते हैं।[10]

(5) संबंधों का प्रबंधन- पारस्परिक संपर्क, संघर्ष समाधान और वार्ता को संभालना। रिश्तों का विश्लेषण करने और समझने की क्षमता में वृद्धि, संघर्षों को सुलझाने और असहमति पर बातचीत करने में बेहतर, रिश्तों में समस्याओं को सुलझाने में बेहतर, संचार में अधिक मुखर और कुशल। अधिक लोकप्रिय और निवर्तमान; मित्रवत और साथियों के साथ शामिल, साथियों द्वारा अधिक मांगे जाने वाले, अधिक चिंतित और विचारशील, अधिक "समूहों में अभियोगी और सामंजस्यपूर्ण, अधिक साझाकरण, सहयोग और सहायकता, दूसरों के साथ व्यवहार करने में अधिक लोकतांत्रिक।

निष्कर्ष

वर्तमान खोजी अध्ययन भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यक्तित्व और नौकरी से संतुष्टि के नए उभरते क्षेत्र के लिए एक मूल्यवान अतिरिक्त है। अध्ययन उत्कृष्ट सबूत प्रदान करता है कि कैसे नौकरी की संतुष्टि प्रभावित होती है और भावनात्मक बुद्धि, व्यक्तित्व और लिंग से संबंधित होती है। यदि शिक्षक यह मानने लगे कि उनके पेशे का मानव निर्माण और समाज में आगे बढ़ने में योगदान है, तो उनकी नौकरी से संतुष्टि का स्तर ऊंचा हो जाएगा। एक स्वस्थ समाज और योग्य व्यक्तियों के निर्माण में शिक्षा प्रणाली और विशेष रूप से शिक्षकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक के पास शिक्षा के बारे में अन्य सभी चरों को प्रभावित करने की शक्ति है। अध्यापन व्यवसाय में सफल होने के लिए व्यक्ति को इस पेशे से प्यार करना चाहिए और इसे स्वेच्छा से करना चाहिए

संदर्भ

1. सिंह, बी. और कुमार, ए. (2016)। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लिंग का प्रभाव, शैक्षिक अनुसंधान के यूरोपीय जर्नल, 5(1),

2. शिनू, बी, आर. और कुमारी, एल. (2016)। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के स्कूल शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच संबंध का एक अध्ययन, पैसिफिक बिजनेस रिव्यू इंटरनेशनल, 8(11), पीपी। 9-13।

3. तबाताबेअनद फ़राज़मेहर, (2015), द इमोशनल इंटेलिजेंस एंड ईरानी लैंग्वेज इंस्टीट्यूट टीचर्स जॉब सैटिस्फैक्शन, थ्योरी एंड प्रैक्टिस इन द लैंग्वेज स्टडीज, खंड 5, संख्या 1

4. फलाहनेजाद, जेड। और हसनजादेह, आर। (2015)। नर्सों के व्यक्तित्व प्रकार और नौकरी की संतुष्टि के बीच संबंध, नर्सिंग और मिडवाइफरी विज्ञान के जर्नल, 2 (2), 42-47।

5. चरखाबी, एम. हयाती, डी. और रूही, ए. (2015)। अहवाज जुंदीशापुर यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज से संबद्ध अस्पतालों में कार्यरत नर्सों के बीच व्यक्तित्व लक्षणों और नौकरी की संतुष्टि के बीच संबंधों की जांच, मॉडर्न केयर जर्नल, 12(3), 105-108

6. चक्रवर्ती, ए. (2015), एटिट्यूड ऑफ प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन इन रिलेशन टू इमोशनल इंटेलिजेंस एंड पर्सनैलिटी, पीएच.डी. निबंध, कल्याणी विश्वविद्यालय।

7. एजाज, एम. और खान, ए. (2015)। बैंकिंग कर्मचारियों के बीच नौकरी की संतुष्टि के साथ बड़े पांच व्यक्तित्व लक्षणों का संबंध,

अनुप्रयुक्त पर्यावरण और जैविक विज्ञान के जर्नल, 5(5), 129-138।

8. अलनिदावी, ए.ए.बी. (2015)। नौकरी की संतुष्टि पर भावनात्मक खुफिया का प्रभाव: जॉर्डन के दूरसंचार क्षेत्र में एप्लाइड स्टडी, बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 6 (3), 63-71।

9. निगम, एन.के. और जैन, एस. (2014)। दिल्ली विश्वविद्यालय के फैकल्टी की नौकरी की संतुष्टि पर लिंग आधारित अध्ययन, इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, 3(12), 1-11।

10. इलियास, ए.ई. और जॉर्ज, जे। (2014)। इमोशनल इंटेलिजेंस एंड जॉब सैटिस्फैक्शन: ए कोरिलेशनल स्टडी, आरजेसीबीएस, 1(4), 37-42.

Corresponding Author

Bharti Chouhan*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.